आलस्य और अलबेलापन - 56

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ चाहे सतयुग, त्रेता में श्रेष्ठ पद प्राप्त करना है, चाहे द्वापर, कलियुग में पूज्य पद पाना है लेकिन **दोनों का जमा इस संगम पर करना है। इस हिसाब से सोचो कि संगम समय की जीवन के, छोटे से जन्म के संकल्प, समय, श्वास कितने अमूल्य हैं?** इसमें अलबेले नहीं बनना।

➳ _ ➳ **जैसा आया वैसा दिन बीत गया, दिन बीता नही लेकिन एक दिन में बहुत-बहुत गंवाया। जब भी कोई फालतू संकल्प, फालतू समय जाता है तो ऐसे नहीं समझो - चलो 5 मिनट गया। बचाओ। (15.11.1999)**

➢➢ संकल्प

➳ _ ➳ एक है समय और संकल्प और दूसरा है सेकेंड और श्वांस

➳ _ ➳ **एक एक संकल्प का महत्व है**

→ **क्योंकि संकल्प ही कर्म बोल बनता है**

→ संकल्प बीज है

→ **संकल्पों की एकानामी करनी है**

➳ _ ➳ **जितने हमारे संकल्प कम होगे समर्थ होगे**

→ उतने ही शक्तिशाली होगे

→ उतने ही हम शक्तिशाली होगे।

➢➢ संगमयुग का महत्व

➳ _ ➳ **ये नया जन्म है, छोटा सा जन्म है, अलौकिक जन्म है, दिव्य जन्म है, हीरे तुल्य जन्म है।**

→ नया युग है डायमंड युग है

- **सारे चक्र का ज्ञान व सारे चक्र का रहस्य यहां परमात्मा दे रहा है** इसे कम नहीं समझना।

- **परमात्म मिलन हो रहा है** इस मिलन को कम न समझना।

➳ _ ➳ जिन को ये भाग्य मिला है वो महान योगी कहलाते है

➳ _ ➳ **इस युग का महत्व, इस जीवन का महत्व, इस जन्म का महत्व, इस भाग्य का महत्व, प्राप्ति का महत्व, मिलन का महत्व बुद्धि मे ईमर्ज हो**

→ कौन मिला है क्या मिला है कौन सा भाग्य है ये सारा बुद्धि मे ईमर्ज हो।

➳ _ ➳ **साक्षी होकर देखना इससे ही स्थिति श्रेष्ठ हो सकती है।**

➢➢ समय का महत्व

➳ _ ➳ **एक एक सेकेंड एक एक श्वांस व्यर्थ नही गंवाना है।**

➳ _ ➳ हमारा समय परचिंतन झगमुई झरमुई मे न जाए।

→ इन सब बातों में हमारा रस न हो

➳ _ ➳ जितने सम्बंध है विनाशी सम्बंध है।

➳ _ ➳ मनुष्य तीन चीजो से सीखता है तीन प्रकिया है जैसे जैसे नीचे नीचे होता है दुख अनुभव होता है

➳ _ ➳ **1. सुनना**

→ **सुन लिया और स्वीकार कर लिया**

→ समा लिया बस और कुछ करने की आवश्यकता नही।

→ अनुभव की जरूरत नही।

→ **सुन लिया यही परम सत्य है यही सब कुछ है**

→ उसको सम्पूरण रीति से धारण कर लिया।

→ **सुना और धारण कर लिया**

➳ _ ➳ **2. देखना**

→ सुनना पर इतना असर नही

→ देखा दूसरो के साथ क्या क्या हुआ

- फिर उसका हाल देखकर सीखा

➳ _ ➳ **भगवान ने कहा काम महाशत्रु है**

→ सुना पर इतना विश्वास नही हुआ

→ देखा दूसरो का क्या क्या हाल हुआ

- दूसरे गिरे
- स्थिति नही बन पाई

→ फिर भी नही सीखा

➳ _ ➳ **3. अनुभव**

➳ _ ➳ **भगवान ने कहा सर्व सम्बंध मुझ से जोडो**

→ पर हमने कहा ये सम्बंध भी तो निभाने है।

→ **ब्राह्मण बनने के बाद भी नये सम्बंध किसी को भाई, किसी को बहन, किसी को मां, किसी को मित्र बनाया, अनेक सम्बंध बनाए**

→ पर किसी कमजोरी के वश वायुमंडल के वश माया के वश हाथ डाला

- हाथ जला फिर अनुभव हुआव सीखा
- सब सम्बंध टूट गए
- **सब मे दुखहुआ फिर अनुभव से सीखा**

→ अपने आप को देखो किस केटेगिरी में हूं ??

➳ _ ➳ **जो अनुभव से सीखता है वो ज्यादा शक्तिशाली होता है।**

➳ _ ➳ चौथी विधि है दंड

→ दंड प्राप्त होने के बाद सीखता है।

→ फिर समय सिखाता है

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **दूसरा कारण - अलबेलापन भिन्न-भिन्न रूप में देखा। कोई-कोई में बहुत रॉयल रूप का भी अलबेलापन देखा।** **एक शब्द अलबेलापन का कारण - 'सब चलता है।** क्योंकि साकार में तो हर एक के हर कर्म को कोई देखा नहीं जा सकता है, साकार ब्रह्मा भी साकार में नहीं देख सके लेकिन **अब अव्यक्त रूप में अगर चाहे तो किसी के भी हर कर्म को देख सकते हैं।**

➳ _ ➳ जो गाया हुआ है कि **परमात्मा अव्यक्त ब्रह्मा दोनों साथ-साथ देख सकते हैं।** कोई कितना भी छिपायें, छिपाते भी रॉयल्टी से हैं, साधारण नहीं। तो **अलबेलापन एक मोटा रूप हैं, एक महीन रूप है, शब्द दोनों में एक ही है 'सब चलता है, देख लिया है क्या होता है। कुछ नहीं होता। अभी तो चला लो, फिर देखा जायेगा।"** यह अलबेलेपन के संकल्प है।

➳ _ ➳ बापदादा चाहे तो सभी को सुना भी सकते हैं लेकिन आप लोगों कहते हो ना कि थोड़ी लाज-पत रख दी। तो बापदादा भी लाज-पत रख देते हैं लेकिन यह **अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र नहीं बना सकता। पास विद ऑनर नहीं बना सकता।** जैसे स्वयं आलस्य-अलबेलापन सोचते हैं ना 'सब चलता है'। तो **रिजल्ट में भी चल जायेंगे लेकिन उड़ेगे नहीं।** तो सुना क्या दो बातें देखी! परिवर्तन में किसी न किसी रूप से, हर एक में अलग अलग रूप से अलबेलापन है। तो बापदादा उस समय मुस्कुराते हैं **बच्चे कहते हैं - देख लेंगे क्या होता है। तो बापदादा भी कहते हैं - देख लेना क्या होता है। (31.12.1999)**

➢➢ **रॉयल अलबेलापन**

➳ _ ➳ अलबेलापन

→ केयरलेसनेस

➳ _ ➳ अलबेलापन का कारण

→ सब चलता है

➳ _ ➳ **भगवान की लाखों आंखे है लाखों कान है**

→ **भगवान सब कुछ देख रहा है सब कुछ सुन रहा है।**

→ फिर अमृतवेला बाबा सुनता क्यूं नही है??

- भगवान को भी कभी प्राथनायें सुनना भी अच्छा लगता है।
- भगवान सब कुछ देखता है सब कुछ सुनता है
- शायद **हमारे ही हिसाब किताब है।**

➳ _ ➳ **आज्ञा का उल्लंघन करो तो पहले डर रहता है**

→ पर देखा दूसरे भी उल्लंघन कर रहे है तो क्या होता है

→ तो फिर बडी आज्ञा की अवज्ञा करने की हिम्मत बढ जाती है

→ **अलबेलापन के सूक्ष्म संकल्प है - ये तो होता ही है।**

➳ _ ➳ **परिवर्तन में किसी न किसी रूप से, हर एक में अलग अलग रूप से अलबेलापन है।**

➳ _ ➳ अलबेलापन भी अलग अलग रूप से आता है व उसके भी भिन्न भिन्न रूप है।